Newspaper Clips
October 4, 2014

Nayi Duniya ND 04/10/2014 P-2

आईआईटी, जेएनयू और डीयू भी डिफाल्टरों की सूची में

विदेशी चंदा मामला

- **दिल्ली की 400 संस्थाओं को गृह मंत्रालय का नोटिस**
- **एक माह में दाखिल करना होगा ब्योरा**

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली। विदेशों से चंदा लेने वाले मामले में गृह मंत्रालय ने जिन संस्थाओं को नोटिस जारी किया है उनमे आईआईटी दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय, जेएनयू और सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन भी शामिल हैं। गृह मंत्रालय की सूची में दिल्ली से 400 संस्थाओं के नाम हैं। यह वह संस्थाएं हैं जिन्होंने इन लगातार 3 वित्तीय वर्षों तक विदेशी चंदे की प्राप्ति का ब्योरा सरकार को नहीं दिया है।

गृह मंत्रालय ने यह कदम आईबी की रिपोर्ट के 3 महीने बाद उठाया है, जिसमें खुफिया एजेंसी ने विदेशों से चंदा लेने वाले कई एनजीओ के कथित तौर पर विकास विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने की बात कही थी।

दिल्ली की अन्य प्रमुख संस्थाएं जो डिफाल्टरों की सूची में शामिल हैं, उनमें गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, गार्गी कॉलेज, लेडी इरविन कॉलेज के नाम प्रमुख हैं। विदेशी चंदा नियमन अधिनियम 2010 के तहत पंजीकृत संगठनों को रिटर्न दाखिल करने का साक्ष्य एक महीने के भीतर देने के लिए कहा गया है। यदि संगठन इसका जवाब देने में विफल रहे तो इस अधिनियम के तहत उनका पंजीयन रद्द करने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। गृह मंत्रालय ने कहा है कि इन संस्थाओं को अपनी आय, खर्च और उन विदेशी संस्थाओं का ब्योरा जिनसे धन प्राप्त किया गया है, एक माह के भीतर उपलब्ध कराना होगा। मंत्रालय ने उन संस्थाओं को जिन्होंने विदेशी चंदा नियमन अधिनियम 2010 के तहत रजिस्ट्रेशन कराया है, लेकिन धन प्राप्ति न होने की वजह से ब्योरा उपलब्ध नहीं कराया है, उन्हें भी निश्चित समय सीमा में रिटर्न दाखिल करने को कहा है।

Navbarat Times ND 4/10/2014 P-7

IIT-D : प्री प्लेसमेंट ऑफर

■ नगर संवाददाता, नई दिल्ली

आईआईटी दिल्ली में स्टूडेंट्स को बड़ी कंपनियों से प्री प्लेसमेंट ऑफर मिल रहे हैं। उन स्टूडेंट्स को ऑफर मिला है जिन्होंने कंपनियों में इंटर्नशिप की थी। उन्हें कई कंपनियों ने प्री प्लेसमेंट ऑफर दिए हैं। कई स्टूडेंट्स को फेसबुक, ड्यूश बैंक और दूसरी कंपनियों से ऐसे ऑफर मिले हैं। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग की फोर्थ ईयर की स्टूडेंट रिधी कपूर बताती हैं कि उन्हें ड्यूश बैंक से प्री प्लेसमेंट ऑफर मिला है। हालांकि उन्होंने पैकेज के बारे में नहीं बताया है। कई स्टूडेंट्स के मुताबिक पिछले साल इसी बैंक ने आईआईटी दिल्ली के स्टूडेंट्स को 20 लाख रुपये के करीब पैकेज मिला था।

वहीं कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के स्टूडेंट शिवांक को फेसबुक से प्री प्लेसमेंट ऑफर मिला है। उन्होंने पैकेज के बारे में नहीं बताया है। स्टूडेंट्स ने बताया है कि पिछले साल आईआईटीज में फेसबुक से एक लाख डॉलर के करीब पैकेज गया था। पहली दिसंबर से कंपनियां प्लेसमेंट देने के लिए आईआईटी में आएंगी। जिन स्टूडेंट्स को इंटर्नशिप में प्री प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) मिला है। वहीं कंपनियां उन्हें कंफर्म पैकेज का ऑफर देंगी। अगस्त से कई स्टूडेंट्स को ऐसे ऑफर मिलना शुरू हुए हैं। इनमें से ज्यादातर स्टूडेंट्स ने कंपनियों के साथ नॉन डिसक्लोजर एग्रीमेंट भी साइन किया है। शिवांक बताते हैं कि उन्होंने इसी साल यूएस जाकर फेसबुक में तीन महीने की इंटर्नशिप की थी। जुलाई के आखिरी हफ्ते में उन्हें कंपनी से पीपीओ का ऑफर मिला था। वहीं कंप्यूटर साइंस के स्टूडेंट अतुल को भी फेसबुक ने ऑफर दिया है।

Hindustan ND 4/10/2014 P-5

दिल्ली सरकार के लोक निर्माण विभाग ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल को जानकारी दी

आईआईटी ध्वनि प्रदूषण की समस्या दूर करेगा

ध्वनि प्रदूषण का स्तर

- सुबह 6 बजे ध्वनि का स्तर **74** और शाम 5 बजे **77.6** डेसिबल पाया गया, जबकि रिहायशी इलाके में तय मानक के अनुसार **55** से अधिक नहीं होना चाहिए
- रात के 11 बजे ध्वनि का स्तर **77.1** डेसिबल पाया गया, जबकि रात में यह **45** डेसिबल से अधिक नहीं होना चाहिए

पंचशील मामला

नई दिल्ली | प्रभात कुमार

बाहरी रिंग रोड पर भारी यातायात के कारण बढ़ता ध्वनि प्रदूषण पंचशील पार्क इलाके के लोगों में गंभीर बीमारियों को जन्म दे रहा है। उच्च रक्तचाप और सुनने की क्षमता प्रभावित होने के साथ-साथ बुजुर्गों को अनिद्रा जैसी बीमारियां हो रही हैं। अब आईआईटी रुड़की के विशेषज्ञ यहां पर ध्वनि प्रदूषण कम कर लोगों को इस समस्या से छुटकारा दिलाएंगे। दिल्ली सरकार के लोक निर्माण विभाग ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल को यह जानकारी दी।

जस्टिस यू.डी. साल्वी की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष लोक निर्माण विभाग ने कहा कि आईआईटी रुड़की के विशेषज्ञ दो सप्ताह के भीतर ध्वनि प्रदूषण कम करने के उपाय बताएंगे। ट्रिब्यूनल ने पंचशील पार्क के लोगों की शिकायत पर सरकार, लोक निर्माण विभाग, डीडीए और अन्य निकायों को उपाय तलाशने को कहा था। पीडब्ल्यूडी के आग्रह पर आईआईटी रुड़की के विशेषज्ञों ने मौके का जायजा लिया और वाहनों की आवाजाही से जुड़े जरूरी आंकड़े भी ले गए। ट्रिब्यूनल ने आईआईटी रुड़की से इस मामले में याचिकाकर्ता के सुझावों पर भी विचार करने को कहा है।

पंचशील पार्क को-ऑपरेटिव हाउस बिल्डिंग सोसायटी के अध्यक्ष ओमेश सैगल ने याचिका दाखिल कर यहां पर ध्वनि अवरोधक लगाने की मांग की थी।

याचिकाकर्ता का पक्ष

पंचशील पार्क को-ऑपरेटिव हाउस बिल्डिंग सोसायटी ने तीन स्थानों पर श्रीराम औद्योगिक शोध संस्थान से सर्वे करा ट्रिब्यूनल में पेश किया। जिसमें बाहरी रिंग रोड के आसपास तय मापदंडों से कई गुना अधिक ध्वनि प्रदूषण बताया। याचिकाकर्ता के अनुसार, ध्वनि प्रदूषण से इलाके में रहने वाले, खासकर बुजुर्ग कई तरह की बीमारियों की चपेट में आ गए हैं।

इन जगहों पर लगे हुए हैं ध्वनि अवरोधक

- कॉमनवेल्थ गेम्स के दौरान खेल गांव एवं मुनिरका के पास फ्लाईओवर पर ध्वनि अवरोधक लगाए गए थे जो काफी कारगर साबित हुए।
- चिराग दिल्ली और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी), कॉमनवेल्थ खेल गांव फ्लाईओवर पर भी यह उपकरण लगाया गया है।

ध्वनि प्रदूषण से होने वाली बीमारियां

- उच्च रक्तचाप • तनाव • सुनने की क्षमता प्रभावित होना • अनिद्रा

तय मानक से अधिक है ध्वनि प्रदूषण

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण कमेटी ने पाया कि पंचशील इलाके में ध्वनि का स्तर तय मानक से काफी अधिक है। कमेटी ने लोगों की परेशानी को दूर करने के लिए लोनिवि को रिंग रोड पर ध्वनि अवरोधक लगाने का सुझाव दिए थे।

वाहनों की आवाजाही कम नहीं हो सकती

दिल्ली पुलिस ने बाहरी रिंग रोड पर वाहनों की आवाजाही कम करने की संभावनाओं से इनकार किया है। यातायात पुलिस ने कहा है कि यह रोड एनएच-8 और एनएच-2 (दिल्ली-आगरा हाईवे) को जोड़ता है।

ध्वनि अवरोधक यंत्र नहीं है समस्या का समाधान

प्रदूषण नियंत्रण समिति के सुझावों पर पहले यहां ध्वनि अवरोधक लगाया जाना था। लेकिन ट्रिब्यूनल द्वारा गठित कमेटी ने कहा कि मुख्य सड़क और सर्विस लेन के बीच अवरोधक लगाने से कोई फायदा नहीं होगा। इससे सर्विस लेन पर अतिक्रमण को बढ़ावा मिलेगा।

Amar Ujala ND 4/10/2014 P-7

आईआईएम की सीटें बढ़ीं, रजिस्ट्रेशन घटे

अमर उजाला ब्यूरो

ग्रेटर नोएडा। देश में आईआईएस संस्थानों की संख्या बढ़ने और पीजीडीएम सीटें बढ़ने के बाद भी कैट के रजिस्ट्रेशन घटते जा रहे हैं। अगले साल 2015 के बैच से छह नए आईआईएम खोलने की घोषणा हुई है। इन्हें कैट में शामिल करते हुए 19 आईआईएम की 4000 सीटों पर एडमिशन होगा। संस्थान और सीट बढ़ने के बावजूद इस साल आवेदकों की संख्या लगभग 6000 कम हुई है।

आईआईएम में सीट बढ़ने और कैट से आईआईटी, एनआईटी और डीयू जैसे राष्ट्रीय संस्थानों में दाखिला दिए जाने के बाद भी आवेदकों की संख्या नहीं बढ़ पा रही है। इसका सीधा कारण वैश्विक स्तर पर एमबीए-पीजीडीएम का रुझान कम होना बताया जा रहा है। इस बार कैट परीक्षा के लिए 1,89,759 छात्रों ने रजिस्ट्रेशन किया है, जबकि पिछले साल 1,94, 516 छात्रों ने आवेदन किया था। इससे पहले 2008 में कैट के लिए लगभग 2, 76,000 आवेदन आए। इसी साल आई वैश्विक मंदी के बाद से ही मैनेजमेंट सेक्टर में गिरावट का दौर बना हुआ है।

पिछले 8 सालों में आवेदकों की संख्या

साल	आवेदन संख्या
2007	2.70 लाख
2008	2.76 लाख
2009	2.42 लाख
2010	2.04 लाख
2011	2.05 लाख
2012	2.14 लाख
2013	1.95 लाख
2014	1.89 लाख

इस साल 19 आईआईएम की 4000 सीटों के लिए एडमिशन

रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया खत्म पिछले साल के मुकाबले संख्या 6000 घटी

चार शिफ्ट में 16 व 17 नवंबर को कराई जाएगी कैट परीक्षा

कई बदलाव भी नहीं बढ़ा पाए आवेदन

इस साल कैट में कई अहम बदलाव हुए। 20 दिन के 40 स्लॉट की जगह इस बार 2 दिन के 4 स्लॉट में परीक्षा होगी। कैट का दायरा बढ़ाने के लिए 40 शहरों की जगह 99 शहरों परीक्षा कराई जा रही है। पैटर्न में 30 मिनट बढ़ाते हुए 140 की जगह 170 मिनट का पेपर कर दिया गया है। दो सेक्शन में 30-30 की जगह 50-50 सवाल पूछे जाएंगे। छात्रों की सहूलियत के लिए हुई इन तमाम बदलावों के बाद भी आवेदन संख्या नहीं बढ़ पाई।

Hindustan Times ND 4/10/2014 P-11

All 5 payloads of Mangalyaan operating in Mars orbit

Vanita Srivastava
vanita.shrivastava@hindustantimes.com

NEW DELHI: All the five payloads of Mars Orbiter Mission (MOM) — India's maiden spacecraft to Mars — have started operating after entering the Red Planet's orbit.

"All the payloads have been activated and checked. We have also started getting the data. While the laboratory matching has been done, we have to yet interpret the data," an Isro official said.

India had entered an elite space club when its spacecraft entered Mars' orbit on September 24.

The 1,350 kilogram orbiter spacecraft carries five payloads for gathering scientific data

INDIA HAD ENTERED AN ELITE SPACE CLUB WHEN ITS SPACECRAFT ENTERED MARS' ORBIT ON SEPTEMBER 24

that may shed light on Martian weather systems as well as what happened to the water that is believed to have existed once on Mars.

None of the instruments will send back enough information to answer these questions definitively, but experts say the data will help them better understand how planets form and what conditions might make life possible.

While the scientific instruments will work for 6 months, there is a possibility of its life span exceeding beyond that.

Meanwhile Isro is gearing for the launch of IRNSS-IC on October 10 at 0156 hours .

The IRNSS is an independent regional navigational satellite system being developed by India. It is designed to provide accurate position information service to users in India as well as the region extending to 1,500 km from its boundary. The IRNSS would provide two services, with the Standard Positioning Service open for all the users and the Restricted Service, encrypted one for authorised users. IRNSS-1B was launched in April this year. Its predecessor IRNSS-1A was launched in July 2013.

INDIA'S SCIENTIFIC EXPLORATION

The Mars Orbiter Mission carries five scientific payloads to observe the Martian surface, its atmosphere and exosphere

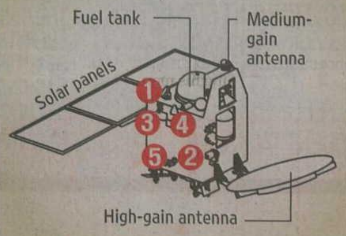

1. **Lyman Alpha Photometer**, an absorption cell photometer that will measure relative abundance of deuterium and hydrogen in the Martian upper atmosphere.
2. **Methane Sensor for Mars**, an instrument that will measure methane in the Red Planet's atmosphere.
3. **Mars Exospheric Neutral Composition Analyser**, a device that will provide measurement of the neutral composition and density distribution of the Martian exosphere
4. **Mars Colour Camera**, a tri-colour camera that will record visuals of surface features and composition of the Martian surface
5. **Thermal Infrared Imaging Spectrometer**, a novel device to measure the thermal emission. It can be operated during both day and night

Hindustan Times ND 4/10/2014 P-9

IISc scientists develop 2-drug cocktail to curb breast cancer

Vanita Srivastava
vanita.shrivastava@hindustantimes.com

NEW DELHI: Scientists at the Indian Institute of Science (IISc), Bangalore, have developed a two-drug cocktail to curb the growth of breast cancer tumours.

The drugs were tested successfully on mice and now, two labs at the IISc are working to develop a molecule for human trials.

The drugs target two cancer causing proteins called Ras and Notch that makes the cancer more aggressive and invasive.

The triple-negative class of breast cancer (TNBC) is more aggressive, grows faster, spreads more and relapses sooner during treatment.

Scientists at IISc have identified these two weapons in the TNBC arsenal and found new ways to neutralise them.

The two-drug cocktail — a monoclonal antibody against Notch1 and a small molecule inhibitor against Ras — shrunk tumours derived from human breast cancer when grown in mice and curbed their aggressiveness, resulting in smaller tumours and better treatment outcomes.

"Though in its early stages, these are promising results that potentially provide a new approach to tackle a formidable and elusive enemy — the triple negative breast cancers," a scientist associated with the study said.

The paper appeared in the journal Molecular Cancer Therapeutics in 2014.

Mint ND 4/10/2014 P-3

SEPTEMBER DATA

US unemployment rate falls below 6%

Jobless rate at 5.9% is the lowest since July 2008; investors double down on bets the Fed will raise rates in July

BY JASON LANGE
feedback@livemint.com

WASHINGTON

US employers ramped up hiring in September and the jobless rate fell to a six-year low, bolstering bets the Federal Reserve will hike interest rates in mid-2015.

Friday's report on employment is the most significant gauge of the economy's health ahead of 4 November congressional elections.

While President Barack Obama's message of an improving economy has been hampered by weakness in wages that persisted through last month, the data nevertheless underscored the strides the labour market has made this year.

US non-farm payrolls rose by 248,000 last month and the jobless rate fell two-tenths of a point to 5.9%, the lowest since July 2008, the labour department said.

"Today's jobs report shows, at long last, what employment growth looks like in a balanced economic expansion," said Robert Shapiro, an economist at Sonecon.

The data was generally stronger than Wall Street analysts had anticipated, and investors doubled down on bets the Fed will raise interest rates in July. They also saw rising chances the first hike could come in June. The central bank has kept benchmark rates near zero since 2008 to encourage investment and hiring.

Still, analysts noted the report bore a large caveat in the form of persistently stagnant wages. Average hourly earnings actually slipped a penny last month.

US NON-FARM PAYROLLS

US payrolls grew by 248,000 in September as the jobless rate hit a six-year low.

TOTAL

Change from previous month (in '000)

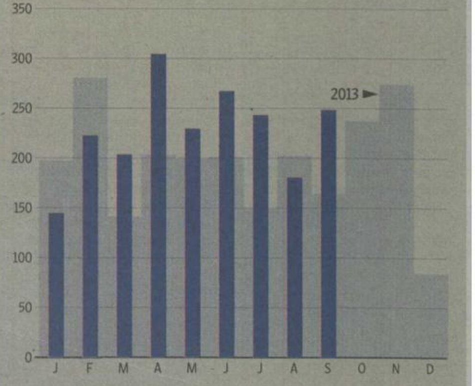

PRIVATE AND GOVERNMENT

Change from previous month (in '000)

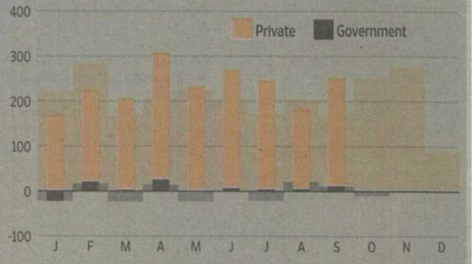

YEAR-TO-DATE NET GAIN/LOSS 2014

2.0 mn	2.0 mn	57,000

YEAR-TO-DATE DIFFERENCE BETWEEN 2014 AND 2013

304,000	223,000	81,000

Source: Reuters

Momentum growing

While weak wage growth is keeping Fed policymakers cautious about the timing of their first rate hike, the pace of hiring has stepped up significantly this year. The gain in payrolls over the last six months was the strongest for any six-month period since before the 2007-09 recession.

In a further sign of strength, 69,000 more jobs were created in July and August than previously estimated.

US stocks rose and yields on US government debt moved up, while the dollar continued a rally that has been in place for weeks.

The employment gains last month were broad-based.

Factories payrolls, which had fallen in August, expanded by 4,000 workers. The retail sector added 35,300 jobs, a big bounce back that the government said reflected an end to employment disruptions at a grocery chain in New England.

Construction and healthcare payrolls also notched solid gains.

There were some downsides, even outside the weakness in wages.

Notably, part of the decline in the unemployment rate was because workers left the labour force. The share of the population with jobs or hunting for one fell to 62.7%, its lowest level since 1978.

That rate has declined in recent years as more workers have retired and as people have given up job hunts due to a weak economy.

Still, a measure of unemployment that partially takes into account worker discouragement fell to 11.8%, its lowest level since October 2008.

The number of people who held part-time jobs but wanted full-time work declined slightly to 7.1 million, a sign of slow progress that will be eyed closely by Fed officials as they seek to gauge how much slack remains in the labour market.

In a sign the economy's expansion is moderating from the second quarter's torrid pace, a separate report showed growth in the US services sector eased in September.

Most economists see the economy growing at around a 3% annual rate in the third quarter, down from the 4.6% rate notched in the April-June quarter but still well above the average over the last two years of 2.2%.

Recent signs of vigour in the economy, however, may be insufficient for the Fed to initiate an early rate increase.

Over the past 12 months, hourly earnings were up only 2%, in line with what has been seen over the past few years and a slight deceleration from August.

"It was a good report but I don't think it changes the Fed dynamics," said Kim Rupert, a managing director at Action Economics in San Francisco. "I still think the first rate hike is maybe mid-year."

In a third report, the Commerce Department said the US trade gap unexpectedly narrowed in August to its smallest level in seven months on an increase in exports, which led some economists to raise their growth forecasts. **REUTERS**

Herb Lash and Michael Connor in New York contributed to this story.

Dollar rises to four-year high

New York/London: The dollar climbed to a four-year high as the US employment rate fell to the lowest since 2008 and the economy added more jobs than forecast, bolstering the case for the Federal Reserve to raise interest rates next year.

The Bloomberg Dollar Spot Index headed for a seventh week of gains, the longest streak since June 2010. The pound dropped below $1.60 for the first time in almost a year and the euro threatened to breach $1.25 for the time in two years. The dollars of New Zealand and Australia plunged at least 1.6%.

The Bloomberg Dollar Spot Index, which tracks the greenback against 10 major currencies, rose 1.1% to 1,079.18 at 12.39pm in New York, after gaining 1.2%, most since 19 June 2013. The gauge touched 1,080.05, the highest closing level since June 2010.

BLOOMBERG

Times of India ND 4/10/2014 P-17

HIV origin is traced back to 1920s Kinshasa

Kounteya.Sinha
@timesgroup.com

The 1920s Kinshasa was the focus of early transmission and the source of pre-1960 HIV pandemic. Location and dating estimates were validated using the earliest HIV-1 archival sample, also from Kinshasa

London: Over 30 years after it first emerged and has since infected over 75 million people, scientists have finally pin pointed from where exactly HIV emerged.

A genetic analysis of thousands of individual viruses has confirmed beyond reasonable doubt that HIV first emerged in Kinshasa, the capital of the Belgian Congo, in about 1920 from where it spread thanks to the colonial railway network to other parts of central Africa.

Scientists have nailed the origin of the Aids pandemic to a colonial-era city – then called Leopoldville which was then the biggest urban centre in Central Africa including a market in wild "bush meat" captured from the nearby forests.

A "perfect storm" of factors then led to the virus' spread in the human population. Scientists from University of Oxford said, "Thirty years after the discovery of HIV-1, the early transmission, dissemination and establishment of the virus in human populations remain unclear. Using statistical approaches applied to HIV-1 sequence data from central Africa, we show that from the 1920s Kinshasa was the focus of early transmission and the source of pre-1960 pandemic viruses elsewhere. Location and dating estimates were validated using the earliest HIV-1 archival sample, also from Kinshasa. Our results reconstruct the early dynamics of HIV-1 and emphasize the role of social changes in the establishment of this virus in human populations."

The breakthrough was possible due to a new, sophisticated analysis of hundreds of genetic sequences of HIV from different time points and locations. The researchers also note that 13 documented cases exist of different simian viruses jumping from chimpanzees, gorillas and monkeys into humans, but only one—known as HIV-1 group M—sparked a global epidemic. They show that group M and another strain, group O, expanded at the same rate until about 1960, but then group M nearly tripled its rate of spread.

For the full report, log on to www.timesofindia.com